ग्रामीण बस्तियों के प्रकार
(Types of Rural Settlement)

ग्रामीण बस्तियों का प्रकार स्थान एवं बसाव गृह्य के पारस्परिक संबंधों का परिणाम है। बस्तियों की मकानों की संख्या और मकानों के बीच पारस्परिक दूरी के आधार पर बस्तियों के प्रकार का निर्धारण होता है। ये भौतिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण जन्म लेता है तथा बस्तियां सघन एवं बिखरे रूपों प्रारूपों में बस जाती हैं। सघन बस्तियाँ केन्द्रोन्मुखी शक्तियों का परिणाम होता है जबकि बिखरी बस्तियां केन्द्रापसारी शक्तियों (बाहर्य शक्ति) का परिणाम होता है। ग्रामीण बस्तियां दो प्रकार की होती हैं -

(i) गुच्छित बस्ती (Compact Settlement)
(ii) प्रकीर्ण बस्ती (Dispersed Settlement)

गुच्छित बस्तियां

इस प्रकार की बस्तियों का बसाव पास-पास होते हैं। गांव के मकान एवं झोपड़ी सटे हुए एवं सघन रूप से बने होते हैं। ऐसी बस्तियां मैदानी भागों की विशेषता है जहां कृषि के लिए भूमि की आवश्यकता भी अधिक है।

इस प्रकार की बस्तियों की अलग-अलग प्रवृति होती है। इसके विकास की निम्नलिखित परिस्थितियां होती हैं -

(i) अधिकतर भूमि कृषि के लिए उपयोगी होती है अतः कम से कम जगह पर लोग रहना चाहते हैं। मैदानी क्षेत्र में गुच्छित बस्तियों के विकास का प्रमुख कारण यही है।

(ii) बाढ़ ग्रसित क्षेत्रों में उच्च भूमि पर गुच्छित बस्ती विकसित हो जाते हैं।

(iii) पेय जल के अभाव में सीमित क्षेत्रों में अधिक से अधिक लोग रहना चाहते हैं। जैसे मरुस्थल में गुच्छित बस्ती का विकास होता है।

(iv) जंगली जानवरों का भय या सामाजिक व्यवस्था के पतन से भी गुच्छित बस्तियों का विकास होता है।

पुनः वितरण प्रारूप के आधार पर गुच्छित बस्तियों को पांच वर्गों में विभाजित किया जाता है—

1. मानसूनी गुच्छित बस्तियां (Monsooni compact)
2. लगभग गुच्छित बस्तियां (Semi compact)
3. रेखीय गुच्छित बस्तियां (Linear compact)
4. गुच्छित सह पुरवा बस्तियां (Compact cum Hamlet)
5. गुच्छित सह पुरवा सह बिखरी बस्तियां (Compact cum Hamlet cum Scatter)

1. मानसूनी गुच्छित बस्ती - इसका विकास मुख्यतः बाढ़ के मैदानी क्षेत्र में होता है, जैसे - गंगा - ब्रह्मपुत्र का मैदान। इन क्षेत्रों में बसने योग्य सीमित उच्च भूमि है। अतः इस ऊँची भूमि पर गुच्छित बस्ती का विकास होता है।

2. लगभग गुच्छित बस्ती — इन बस्ती का विकास वहां है जहां मैदान तथा उपजाऊ भूमि हो, किंतु बाढ़ का भय अत्यंत सीमित हो, ऐसी स्थिति में बस्तियों का फैलाव हो जाता है, लेकिन यह मानसूनी की तुलना में कम सघन होती है। जैसे ऊपरी गंगा का मैदान, पंजाब, हरियाणा, मध्यवर्ती इरावदी का मैदान आदि।

3. रेखीय गुच्छित बस्ती – इसमें एक रेखा के सहारे सघन बस्तियों का विकास हो जाता है। इस प्रकार की बस्तियों का विकास तीन परिस्थितियों में होता है;

(i) प्राकृतिक बांध पर – बाढ़ ग्रसित क्षेत्रों में प्राकृतिक बांध सुरक्षित क्षेत्र होने के कारण रेखीय गुच्छित बस्ती का विकास होता है, जैसे – ब्रह्मपुत्र का मैदान

(ii) राजमार्ग पर – राजमार्गों के किनारे आवागमन की सुविधा तथा आसपास का क्षेत्र संसाधनात्मक दृष्टिकोण से विकसित होता है। परिणामस्वरूप इस प्रकार की बस्ती का विकास होता है। जैसे तिरुवनंतपुरम से कन्याकुमारी के बीच।

(iii) नहर के किनारे – नहर के किनारे पेयजल की सुविधा सिंचाई सुविधा से कृषि भूमि का अधिक उपयोग के कारण रेखीय गुच्छित बस्ती का विकास होता है, जैसे आगरा नहर के किनारे।

4. गुच्छित सह पुरवा बस्तियां (Compact cum Hamlet Settlement) – ये वे बस्ती है जहां केंद्र में वृहद् गुच्छित बस्ती तथा चारों ओर छोटी-छोटी बस्ती होती है। बड़ी बस्ती सर्वाधिक उत्कृष्ट जगह पर विकसित होती है। भारत में छोटी बस्तियां टोला के नाम से जाना जाता है और टोला जाति के नाम से। वस्तुतः बड़ी बस्ती में सर्वाधिक समुदाय का अधिवास होता है तथा जहां अधिकतर भूमि पर आधिपत्य रखने वाली होती है। छोटी बस्ती में खेतीहर मजदूर, सीमांत कृषक, लघु कृषक, सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोग रहते हैं। बड़ी एवं छोटी बस्तियों के बीच निरंतर

अंतराकर्षण होता है। यह भारतीय उपमहाद्वीप के मैदानी क्षेत्रों की बहुत बड़ी विशेषता होती है इसके अलावा इरावदी का मैदान दक्षिणी चीन में भी मिलती है। सामान्यतः ये बस्तियां सामाजिक धार्मिक कारण से विकसित होते हैं।

5. अपखंडित सह पुरवा सह बिखरी बस्ती – इस प्रकार की बस्ती में एक प्रमुख बस्ती होती है, जिसमें कई टोले होते हैं या एक मध्य बड़ी बस्ती के चारों कई-छोटी-छोटी बस्तियां होती हैं। साथ ही कई मकान गांव की सीमा के अंतर्गत यत्र-तत्र बिखरे रहते हैं। ऐसी बस्ती दो प्रकार की होती है —

(i) जमींदारी प्रणाली – ऐसी बस्ती बिहार के पूर्वी मैदान पूर्णिया, किशनगंज क्षेत्र में तथा महानदी, गोदावरी, सिंधु के मैदान में भी पाया जाता है।

(ii) दूसरे प्रकार की बस्ती हरित क्रांति का परिणाम है – पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इस प्रकार की बस्ती है, जहाँ फार्म हाउस के रूप में मकान मिलते हैं। नील नदी घाटी पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र में भी ऐसी बस्तियां विकसित हुई हैं।

प्रकीर्ण बस्ती (Scattered or Dispersed)

इस बस्ती का बसाव दूर-दूर तक फैले होते हैं। सामान्यतः इस प्रकार की बस्तियों का विकास पठारी या पर्वतीय क्षेत्रों में होता है। इसका विकास निम्न कारकों पर निर्भर करता है —

(i) इस प्रकार की बस्ती का बसाव दूर-दूर तक फैले होते

कृषि संसाधन छोटे-छोटे टुकड़ो में बिखरे होने से प्रत्येक जगह पर मैदान लेते हुए बस्ती बन जाती है। इसमें एक जगह पर कुछ ही परिवार रह पाते हैं तथा दूसरे परिवार दूसरे जगहों पर। अन्तर्प्रवाह मैदानों में इस प्रकार की बस्ती का विकास हो जाता है।
(ii) संपूर्ण जगह बाढ़ग्रस्त जनसंख्या दबाव कम, पेयजल की सुविधाएं आदि सभी जगह समान रूप से उपलब्ध हो तो प्रकीर्ण बस्तियों का विकास होता है।
(iii) जंगली जानवरों तथा सामाजिक तनाव का भय न होना ऐसी परिस्थितियों से भी प्रकीर्ण बस्तियों का विकास होता है।
(iv) आधुनिक समय में कृषि विकास के अंतर्गत खेत को चक बना कर रखते हैं इससे भी प्रकीर्ण बस्तियों का विकास होता है।
भौगोलिक दृष्टि से प्रकीर्ण बस्तियों को 5 वर्गों में बांटते हैं —
1. एकाकी प्रकीर्ण बस्ती (Isolated Scattered Settlement)
2. बिखरी प्रकीर्ण बस्ती (Sprinkled Scattered)
3. अर्द्ध प्रकीर्ण बस्ती (Semi Scattered)
4. रेखीय प्रकीर्ण बस्ती (Linear Scattered)
5. सीढ़ीनुमा प्रकीर्ण बस्ती (Step Scattered)

1. एकाकी बस्ती – दुनिया में जहां कहीं विस्तृत कृषि होती है वहाँ, इस प्रकार की बस्ती का विकास होता है। भारत में ऐसी बस्तियों का विकास नहीं हुआ है। इस प्रकार की बस्तियां यूरोप, U.S.A

अर्जेन्टिना, ऑस्ट्रेलिया इत्यादि विकसित देशों में पाया जाता है। यहां मिश्रित कृषि में इसका विकास हुआ है। इसमें मकान नियोजित रूप से एक-दूसरे से दूर होती है।

2. बिखरी प्रकीर्ण बस्ती - इसका विकास पहाड़ी क्षेत्र में यत्र-तत्र बिखरे अवस्था में हुआ है। इसमें मुख्यतः जनजातीय समुदाय के लोग रहते हैं। जो आस-पास के संसाधनों पर ही निर्भर करते हैं। जैसे उड़ीसा के आंतरिक क्षेत्र आदिवंड के सिंहभूम जिले का

3. अर्द्ध प्रकीर्ण बस्ती - इस बस्ती का विकास उन पहाड़ी क्षेत्रों में हुआ है जहां तुलनात्मक दृष्टि से अधिक समतल कृषि योग्य भूमि क्षेत्र तथा लावा मिश्रित पहाड़ी क्षेत्र है। दक्कन लावा प्रदेश प्रमुख उदाहरण है।

4. रेखीय प्रकीर्ण बस्ती - रेखीय प्रकीर्ण बस्तियों का विकास पांच परिस्थितियों में होता है -

(i) उन बांधों पर जहां बाढ़ का खतरा न हो तथा आसपास जलमग्न क्षेत्र हो।

(ii) राजमार्ग के किनारे - आस-पास संसाधनों की कमी के कारण राजमार्गों के किनारे बसने से स्वरोजगार और आवागमन की सुविधा हो जीवन निर्वाह हो जाता है। जैसे - दक्कन राजमार्ग के किनारे।

(iii) नहर के किनारे - जल सुविधा के कारण इस प्रकार की बस्ती का विकास हुआ है। जैसे - इंदिरा गांधी नहर के किनारे।

(iv) वनीय क्षेत्रों में भी रेखीय प्रकीर्ण बस्ती देखने को मिलती है, यहां जनजातीय बस्तियां पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

(v) पर्वतीय शिखरों पर भी प्रकीर्ण बस्तियों का विकास होता है जब खाली क्षेत्र में सघन वन हो तथा उसमें आदिवासीय परिस्थितियाँ अनुकूल न हो। मिजोरम में ऐसी बस्तियां मिलती है। गोंड जनजाति की बस्तियां भी इसी प्रकार की होती है।

5. लीडीनुमा प्रकीर्ण बस्तियां — इसका विकास मुख्यतः उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में हुआ है। इसमें लीडीनुमा आकार की बस्तियां दूर-दूर तक फैली हुई होती है रॉकी, आल्पस, एंडीज पर भी ऐसी बस्तियां मिलती है। केन्या में मसाई जनजाति की बस्तियां लीडीनुमा बस्तियां है।